

ifjp;

प्रत्येक संगठन के लिए यह जरूरी होता है कि उसका विकास और वृद्धि निरंतर होता रहे. इसके अलावा इसमें यह क्षमता भी होनी चाहिए कि वह 21वीं शताब्दी की चुनौतियों का सामना कर सके.

प्रशिक्षण वह साधन है जो किसी संगठन में निरंतर सुधार करने और परिवर्तन से उत्पन्न हुई परिस्थितियों का सामना करने में सहायक होता है. अतः यह आवश्यक है कि प्रशिक्षण प्रभावी हो. यह स्वीकार करना भी जरूरी है कि प्रशिक्षक, सीखने वाले को केन्द्र बिन्दु बनाए और प्रदाता (Provider) के स्थान पर सुगमकर्ता (Facilitator) की भूमिका अदा करे। इस प्रशिक्षण कोर्स में इसी सिद्धांत का पालन किया गया है.

y{;

इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के निम्नलिखित लक्ष्य हैं :

1. बुनियादी अनुदेशी कौशल (Instructional Skills) के विकास के अवसर प्रदान करना.
2. सीखने के लिए अनुकूल वातावरण (Learning Environment) का निर्माण और प्रबंध करना.

fdudsfy; s: i kdr

यह इनके लिए बनाया गया है जिन्हें इस कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है :

1. ऐसे प्रशिक्षक जिनके कर्तव्यों में प्रशिक्षण से संबंधित कार्य और जिम्मेदारियां शामिल हैं.
2. ऐसे प्रशिक्षक जो अपने अनुदेशी कौशल का पुनरावलोकन करना चाहते हैं.
3. ऐसे व्यक्ति जो प्रशिक्षण संबंधी दायित्व सम्हालते हैं।

l kedrkl

सुगमकर्ता इस पाठ्यक्रम को संचालित करने के लिए सक्षम है जिन्हें भारत सरकार के कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के प्रशिक्षण प्रभाग द्वारा सक्षमता का प्रमाण पत्र दिया गया है. इस क्षेत्र में वे अनुभवी हैं।

if'k{k.k i kB; dE dh 'kSyh

यह एक संक्षिप्त और गहन (Intensive) प्रशिक्षण है, जिसमें अनेक गतिविधियां हैं। चूंकि इसमें छोटे समूहों में अभ्यास करने पर जोर दिया जाता है, इसलिए एक सुगमकर्ता के साथ अधिक से अधिक 6 सहभागी होंगे। प्रतिभागियों को इस पाठ्यक्रम में इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा कि वे अपने सीखने के अनुभवों को एक दूसरे के साथ बांटें, तथा फीडबैक (Feedback) का आदान-प्रदान करें।

प्रतिभागियों को प्रशिक्षण नीति की गतिविधियों में सहायता देने के लिए व्यापक पठन सामग्री दी जाएगी। इस सामग्री का उपयोग लम्बे समय तक जानकारी और मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। प्रत्यक्ष प्रशिक्षण के विभिन्न पक्षों को उदाहरणों एवं श्रण्य-दृश्य माध्यमों से समझाने का प्रयास किया गया है।

यह प्रशिक्षण पूर्णतः आवासीय है, क्योंकि इस प्रशिक्षण में शाम को अगले दिन की तैयारी करनी पड़ती है। इससे पूरा लाभ उठाने के लिए यह जरूरी है कि सहभागी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की गतिविधियों में अपना पूरा समय लगाएं।

प्रतिभागी अपने साथ लाए गए उपकरणों और सामग्री का उपयोग कोचिंग (Coaching) सत्र के लिए करेंगे। उन्हें अन्य किसी तैयारी की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकतानुसार उन्हें सामग्री प्रदान की जाएगी।

mís;

पाठ्यक्रम की समाप्ति के उपरान्त प्रतिभागी इस योग्य होंगे कि वे :

1. शिक्षण (Education) प्रशिक्षण (Training) और सीखने (Learning) में अंतर बना सकेंगे।
2. प्रशिक्षण की सुव्यवस्थित प्रणाली (SAT) के चार चरणों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. प्रशिक्षण की सुव्यवस्थित की प्रणाली (SAT) के अन्तर्गत प्रशिक्षक की भूमिका की समीक्षा कर सकेंगे।
4. सीखने की इकाई (Learning Unit) की अवधारणा का प्रशिक्षण गतिविधियों में उपयोग कर सकेंगे।
5. प्रशिक्षण के उद्देश्य लिख सकेंगे।

6. सीखने की चार विधियों की उपयोग करते हुए प्रशिक्षण गतिविधियों की योजना बना सकेंगे.
7. प्रशिक्षण में फीडबैक की प्रक्रिया और उसके महत्व का विवरण दे सकेंगे.
8. सीखने में मदद देने के लिए कोचिंग विधि (Coaching Method) के उपयोग का विवरण दे सकेंगे.
9. किसी व्यावहारिक कार्याश (Task) के लिए कोचिंग सत्र की योजना बना कर उसे कार्यान्वित कर सकेंगे.
10. कोचिंग का पुनरावलोकन कर सकेंगे.
11. सीखने में मदद देने के लिए व्याख्यान विधि के उपयोग का विवरण दे सकेंगे.
12. व्याख्यान की तैयारी के आवश्यक चरणों का विवरण दे सकेंगे.
13. व्याख्यान दे सकेंगे.
14. श्रव्य-दृश्य (Audio- Visual Aids) के उपयोग और लाभों का विवरण दे सकेंगे.
15. प्रस्तुतीकरण के लिए श्रवण-दृश्य सामग्री तैयार कर उसका उपयोग कर सकेंगे.
16. व्याख्यान का आंकलन कर सकेंगे.
17. सीखने में मदद के लिए परिचर्चा का उपयोग कर सकेंगे.
18. परिचर्चा को प्रभावित करने वाले विभिन्न प्रकार के व्यवहारों का विवरण दे सकेंगे.
19. परिचर्चा के दौरान प्रश्नों के महत्व का विवरण दे सकेंगे.
20. परिचर्चा का संचालन कर सकेंगे.
21. परिचर्चा सत्र का आंकलन कर सकेंगे.
22. सीखने में समूह अभ्यास (Group Exercise) किस प्रकार से उपयोगी है यह बता सकेंगे.
23. समूह अभ्यास की रूपरेखा बनाकर उसका संचालन कर सकेंगे.
24. प्रमाणीकरण के लिए सक्षमता का प्रमाण पत्र को प्राप्त कर सकेंगे.

vidya

प्रतिभागियों को उनके अनुदेशी कौशलों के विकास में सहायता देना इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की प्राथमिकता है. अतः अनौपचारिक फीडबैक एवं व्यक्तिगत सहभागियों को परामर्श से आंकलन जुड़ा हुआ है.

I rr fodkl

प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए यह प्रशिक्षण पाठ्यक्रम अनिवार्य नींव है। उनके लिये प्रशिक्षण डिजाइन (Design of Training-DoT) और प्रशिक्षण प्रबंधन (Management of Training-MoT) से संबंधित अन्य प्रशिक्षण भी उपलब्ध हैं। इनका विस्तृत विवरण कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग, भारत सरकार के प्रशिक्षण प्रभाग से या उनके द्वारा चिन्हित क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्रों से प्राप्त किया जा सकता है।

I e; &I kj.kh

विभिन्न प्रकार की सीखने की गतिविधियों को पांच दिन के प्रशिक्षण कोर्स में सम्मिलित किया गया है। शाम को कुछ अतिरिक्त कार्य करने की प्रतिभागी से आशा की जा सकती है।

दिन और समय	विषय वस्तु	उद्देश्य
सोमवार 09.00—18.00	परिचय	1
	प्रशिक्षण की सुव्यवस्थित प्रणाली	2
	प्रशिक्षक की भूमिका	3
	प्रशिक्षण की योजना बनाना	4—6
	फीड बैंक	7
	कोचिंग का परिचय	8
मंगलवार 09.00—18.00	कोचिंग का अभ्यास	9
	कोचिंग अनुशिक्षण का पुनरावलोकन	10
	व्याख्यान विधि का परिचय	11
	व्याख्यान की तैयारी	12—13
	श्रण्य—दृश्य सामग्री	14—15
बुधवार 09.00—18.00	व्याख्यान का अभ्यास	13
	व्याख्यान का पुनरावलोकन	16
	परिचर्चा विधि का परिचय	17
	परिचर्चा की विधि तैयारी	18—19
गुरुवार 9.00—18.00	परिचर्चा का संचालन	20
	परिचर्चा संचालन का पुनरावलोकन	21
	समूह अभ्यास विधि का परिचय	22
	समूह अभ्यास की रूपरेखा बनाना	23
शुक्रवार 09.00—18.00	समूह अभ्यास का अभ्यास	23
	समूह अभ्यास का पुनरावलोकन	
	योजना, विकास और मूल्यांकन	24
	प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की समीक्षा	
	तात्कालिक प्रतिक्रिया प्रश्नावली	